चतुर्थ अध्याय

''विवेच्य काव्य में युगजीवन की समस्याएँ एवं समाधान''

चतुर्थअध्याय

''विवेच्य काव्य में युगजीवन की समस्याएँ एवं समाधान''

प्रास्ताविक :

हर युग में मनुष्य जाति के लिए कोई-न-कोई समस्याएँ रही ही हैं। सिर्फ समयानुसार समस्याओं का स्वरूप बदलता रहा है। वर्तमान मानवी जीवन अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। वर्तमान जीवन में विज्ञान की भूमिका भी संशयास्पद रही है क्योंकि विज्ञान के अनेक अच्छे-बुरे परिणाम सामने आ रहे हैं। इसी कारण ऊँचे प्रगति के शिखर पर पहुँचने के बाद भी मानवी जीवन दिग्भ्रांत है। 'मधुमती' के 'शाश्वत है - गीता दर्शन' शीर्षक अंतर्गत काव्य पंक्तियों में लिखा है -

''चतुर्दिक स्वार्थ . . . . .
गोया पंचम पुरुषार्थ
. . . . . हम सभी
आज भी
दिग्भ्रमित पार्थ !!''[1]

इस तरह मिश्र जी ने अपने काव्य में भी दिंग्भ्रमित समाज की अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। उनके काव्य में 'शहरी' तथा 'ग्रामीण' जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण मिलता है। इसका प्रमुख कारण है - दोनों परिवेश से मिश्र जी का अटूट संबंध रहा है। स्वातंत्र्योत्तर काल की बदलती परिस्थितियों ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया। इन समस्याओं को सूक्ष्मता से यथार्थ रूप में कवि ने विवेच्य काव्य-संग्रहों में अंकित किया है। आज मनुष्य का जीवन शोषण, भ्रष्टाचार, घुटन, संत्रास, भय आदि समस्याओं के कारण आदमी की हालत तुफान में फँसे नौका की तरह हुई है। इसे सँवारने का कार्य भी कवि लोगों को करना पड़ता है। इसी कारण मिश्र जी के काव्य में परिवर्तन के कुछ संकेत भी मिलते हैं, जिसे हम 'समाधान' के अंतर्गत देख सकते हैं। अत: रामदरश मिश्र जी के काव्य में चित्रित समस्याओं को और समस्याओं के समाधान को इस प्रकार प्रस्तुत किया है -

4.1 विवेच्य काव्य में चित्रित समस्याएँ :

कवि रामदरश मिश्र जी के काव्य में स्वातंत्र्योत्तर काल की बदलती परिस्थिति के कारण उत्पन्न अनेक समस्याओं का चित्रण मिलता है। इसमें से प्रमुख समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है -

4.1.1 **भ्रष्टाचार की समस्या -**

स्वातंत्र्योत्तर काल की यह महत्त्वपूर्ण समस्या है। वर्तमान युग में इस समस्या ने महाभयानक रूप धारण किया है। इसे आज कोई रोक नहीं सकता। इस भ्रष्टाचार के कारण ही आम जनता पीसती जा रही है। भ्रष्टाचार के कारण हुई आम जनता की हालत रेखांकित करते हुए गोपाल चतुर्वेदी अपने 'रेत में खेत' लेख में लिखते हैं कि ''हमने अक़सर देखा है। जानी-मानी भ्रष्टाचारी हस्तियों का घर भरा और सिर तना रहता है। शायद झुका सिर और सशंकित व्यक्तित्व ही आज के जमाने की कायर ईमानदारी का लक्षण है।''[2] मिश्र जी ने अपने कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत समस्या पर प्रकाश डाला है। 'लाशों के बीच' कविता में वे कहते हैं कि भ्रष्टाचार ने लोगों को इतना जकड़ लिया है कि उन्हें सदैव जीवित होने की पीड़ा सताती है। क्योंकि अगर किसीसे हमारा काम निकलवाना है तो उस अधिकारी को रिश्वत दिये बिना जल्दी काम नहीं होता। इसके साथ ही 'नदी बहती है', 'बरसात गयी', 'वसन्त' आदि कविताओं में भ्रष्टाचार संबंधी चित्रण मिलता है। 'लाशों के बीच' कविता में मिश्र जी कहते हैं -

''कुरसियों पर, तख्तों पर, मुरदे बिछे हैं,
जिनके बीच से
जीवित होने की पीड़ा लिये गुजरते हैं कुछ लोग।
मुरदों के हाथ फैले हैं
जिनमें चुपचाप नोट ठूँस कर
अभ्यस्त लोग आगे सरक जाते हैं।''[3]

इस प्रकार कुर्सी पर बैठे अफसरों की अवस्था मुर्दों जैसी हुई है, जिनके शरीर से आत्मा और कर्तव्य नाम की चीज समाप्त हुई है। इस प्रकार का तीखा व्यंग्य उनके काव्य में परिलक्षित होता है।

4.1.2 **शोषण की समस्या -**

शोषण केवल आज की ही प्रमुख समस्या नहीं है बल्कि स्वातंत्र्य पूर्व काल में भी राजा-महाराजा, सेठ-साहूकार, जमींदार आदियों के द्वारा जनता शोषित रही है। स्वातंत्र्योत्तर काल में इस समस्या में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। कल-कारखानदार, अमीरों तथा अफसरों के द्वारा भी जनता का शोषण होता रहा है। परिणामत: मिश्र जी के काव्य में उक्त समस्याओं का यथार्थ चित्रण मिलता है। इस दृष्टि से उनकी 'नदी बहती

है', 'राजधानी एक्सप्रेस', 'लाशों के बीच' तथा गज़ल क्रमांक 16, 36, 49 आदि उल्लेखनीय गज़लें तथा कविताएँ हैं। 'राजधानी एक्सप्रेस' कविता में मिश्र जी ने ग्रामीण जनता को कुचलाकर शहरों में अमीरों के लिए किस प्रकार योजनाएँ बनाई जाती है इसका यथार्थ चित्रण किया है, जिसके कारण आम जनता का शोषण होता रहा है। गज़ल क्रमांक 16 में निम्न तथा मध्य वर्ग के शोषण का चित्रण किया है -

> ''खेतों, ताल-तलैयों में छलकाती जाती पानी है
> लुटा रही खुद को देखो नदियाँ कैसी दीवानी है
> भगे जा रहे लोग कहीं पर मैं ठहरा सा देख रहा
> सच कहते हैं लोग कि मुझमें अभी बहुत नादानी है।''[4]

अत: स्पष्ट है कि उक्त पंक्तियों में व्यंग्य के द्वारा कवि ने शोषण की समस्या को वाणी दी है।

4.1.3 भय की समस्या -

आज समाज में भय की समस्या इतनी जटिल हो गयी है कि सुबह घर से निकला आदमी शाम को सकुशल वापस आयेगा इसका भरोसा नहीं रहा। आज शहरों में घर में भी असुरक्षितता महसूस हो रही है। दिन-दहाड़े गुंडे घर में घुसकर हमला कर रहे हैं। इसी कारण आदमी के अस्तित्व के सामने प्रश्नचिह्न सा लगा है। दिन-दहाड़े लूटमार, खून-खराबी, बलात्कार आदि बातों ने लोगों का जीना हराम कर दिया है। मिश्र जी की कई कविताओं में तथा ग़ज़लों में इसका चित्रण प्राप्त होता है। उनकी 'कोई दर्पण टूटा होगा', 'खाली हूँ मन भरा-भरा-सा', 'दस्तक', 'फिर वही लोग' तथा गज़ल क्रमांक 7, 9, 15 आदि गज़लों तथा कविताओं में भय की समस्या संबंधी चित्रण मिलता है। भय के कारण व्यक्ति में आये मानसिक बदलाव का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है -

> ''कौन आया होगा?
> बार-बार दस्तक बज रही है।
> दस्तक के बाद किवाड़ खोलने की उत्सुकता
> कहाँ चली गयी?''[5]

'दस्तक के बाद किवाड़ खोलने की उत्सुकता कहाँ चली गयी?' इस प्रश्न का उत्तर इसी कविता में अगली कुछ पंक्तियों में मिलता है -

"मेरी आँखों के भीतर से गुज़र रही हैं -
खूँखार बन्दूकें,
लपटों से लपलपाती आँखें
और तेजाब की तर खौलता अजनबी मौन"[6]

कहना आवश्यक नहीं कि शहरों में भी भय की समस्या एक नए मोड़ पर खड़ी है। जिसके कारण आदमी मुक्त रूप से संचार नहीं कर सकता। उसके मन में हमेशा एक डर छाया रहता है।

4.1.4 बेरोजगारी तथा गरीबी की समस्या -

बेरोजगारी वर्तमान युग की महत्त्वपूर्ण समस्या है। यह समस्या बुजुर्गों को ही नहीं युवा पीढ़ी को भी सता रही है। इस समस्या के कारण युवा पीढ़ी की मानसिकता पर विपरीत परिणाम हो रहा है। बेरोजगारी ने ही अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। रोजगार के अभाव में युवा पीढ़ी कुंठित अवस्था से गुजर रही है। परिणामस्वरूप समाज में व्यसनाधीनता, आतंकवाद जैसी समस्याएँ फैल रही हैं। मिश्र जी के काव्य में इस समस्या संबंधी भी चित्रण मिलता है। 'दिशाएँ बन्द हैं', 'जलते हैं फूल' आदि कविताओं में इन समस्याओं का चित्रण हुआ है। बेरोजगारी, प्रगति का सबसे बड़ा रोड़ा है। इस समस्या के कारण काम करने की इच्छा होते हुए भी काम नहीं मिलता। 'जलते हैं फूल' कविता में बेरोजगारी की समस्या को उजागर किया है। स्वयं कवि भी इस समस्या से गुजर चुके हैं। बेरोजगारी से ग्रस्त जीवन का चित्रण करते हुए मिश्र जी कहते हैं -

"दिशाएँ बन्द हैं,
आकाश उड़ता फड़फड़ाता है
वही फिर लौट आता है।"[7]

बेरोजगारी से उत्पन्न दूसरी महत्त्वपूर्ण समस्या है - गरीबी। गरीबी मानव जीवन के लिए बहुत बड़ा अभिशाप है। गरीबी के कारण आदमी अपनी मूलभूत जरूरतों को भी पूरा नहीं कर सकता। इस समस्या में वह दिन-रात उलझ रहा है।

स्वर्गीया पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने 'गरीबी हटाओ' योजना का कार्यान्वयन किया था लेकिन इस कार्य में सरकार को पूर्ण सफलता नहीं मिली। गरीबी के कारण पेट की आग बुझाने के लिए अनेक लोगों को खतरों की जगह काम करना पड़ता है, जिसके कारण आदमी अनेक बीमारियों का शिकार बनता जा रहा है। मिश्र जी की कई

कविताओं में तथा ग़ज़लों में गरीबी की समस्या को उठाया गया है। उनकी 'गठरी', 'वह', 'जुलूस', 'फिर वही लोग' आदि कविताओं में तथा ग़ज़ल क्रमांक 2, 7, 14, 18 आदि ग़ज़लों में इस समस्या संबंधी चित्रण मिलता है। इस समस्या से देश के बहुतांश लोगों को जूझना पड़ता है। 'वह' कविता में मिश्र जी गरीबी का चित्रण इस प्रकार करते हैं -

> "बजबजाती हवाओं के बीच
> कच्ची दीवार की टूटी छाया।
> उसके तले
> उसी तरह बैठा हुआ वह ...
> उसके साथ एक कुत्ता, एक बकरी
> और उसका साया।"[8]

स्पष्ट है कि मिश्र जी बेरोजगारी के कारण उत्पन्न गरीबी की समस्या को अंकित करते हैं। इस समस्या के लिए बढ़ती जनसंख्या जिम्मेदार है।

4.1.5 शहरों में बढ़ती जनसंख्या की समस्या -

आज शिक्षा प्रसार तथा औद्योगिक प्रगति के कारण लोग शहरों की ओर बढ़ रहे हैं। इसी कारण शहर महानगरों में बदल रहे हैं। आज प्रत्येक आदमी अपना अलग-अलग मक़सद लेकर शहर की ओर भागता है और उसी शहर में स्थायी होने का प्रयास करता है। इसी वजह से शहरों में जनसंख्या बढ़ती जा रही है। परिणामस्वरूप लोगों को अनेक समस्याओं से सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या संबंधी मिश्र जी के काव्य में कई उदाहरण मिलते हैं। महानगरों की बढ़ती जनसंख्या के कारण बिखराव की स्थिति भी निर्माण हुई है। संस्कृति का स्थान विकृति ने ले लिया है। मिश्र जी की 'सहयात्री', 'सड़क' आदि कविताओं में तथा ग़ज़ल क्रमांक 12 एवं 17 में इसका स्पष्ट रूप से चित्रण मिलता है। 'सहयात्री' कविता में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण है, जिसकी अपनी मंजिल तक पहुँचने के लिए होड़-सी लगी है। जो एक-दूसरे से बोलने के लिए भी तैयार नहीं है। बढ़ती जनसंख्या के कारण आपसी रिश्ते भी टूट रहे हैं -

> "रास्तों के लैंप टूटे, तार सारे कट गये
> जोड़ने वाले हमें, सारे सहारे कट गये।"[9]

उक्त ग़ज़ल के शेर के माध्यम महानगरों में बढ़ती जनसंख्या का स्पष्ट परिणाम सामने आने लगा है।

4.1.6 व्यसनाधीनता की समस्या -

वर्तमान युग की प्रधान समस्या है - व्यसनाधीनता। आज अधिकतर लोग व्यसनाधीनता के कारण अनेक बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। कितने ही ऐसे लोग है जिनका जीवन व्यसनाधीनता के कारण बरबाद हुआ है। इसी व्यसनाधीनता के कारण वे अवैध व्यवसायों में भी जुड़ जाते हैं तथा पुलिस द्वारा पकड़े जाने पर जिंदगी भर पछतावा करते रहते हैं। मगर सरकार भी इस पर प्रतिबंध नहीं लगाती क्योंकि सबसे ज्यादा उत्पन्न सरकार को दो नंबर के धंधों से ही मिलता है। मिश्र जी ने अपनी 'रात और सुबह' कविता में व्यसनाधीनता की समस्या को इस प्रकार उठाया है -

"शहर की गन्दी सड़क पर
रात सोयी रही फूहड़-सी।
बिखरे हैं
उसके टूटे सपने
सिगरेट के खाली 'केस'
रिक्त बोतल के टुकड़े
सुबह झाड़ू दे रही है ..."[10]

उक्त काव्य पंक्तियों में से अंतिम पंक्ति में 'सुबह झाड़ू दे रही है ...' इसका मतलब सरकार इसके प्रति गंभीर नहीं है। इसके विपरित सरकार घातक नशीली पदार्थों के बिक्री को प्रोत्साहन दे रही है। इस प्रकार व्यसनाधीनता की समस्या का चित्रण मिलता है।

4.1.7 असंघटितता तथा दिशाहीनता की समस्या -

प्राचीन काल से समाज टुकडों-टुकडों में विभक्त रहा है। इसके लिए समाज के कुछ ही लोग जिम्मेदार हैं। एक ही देश के लोग, जाति, धर्म, भाषा और प्रदेश के नाम पर एक-दूसरे के साथ लड़ते हैं। इसमें उनका आंशिक स्वार्थ भी निहित होता है। इसी संकुचित मानसिकता के कारण वे प्रचलित सत्ता के विरोध में आवाज नहीं उठा सकते। इसका लाभ उच्च वर्ग उठा रहा है। अर्थात् निम्न वर्ग को कुचलाया जा रहा है। मिश्र जी के काव्य में भी इस समस्या संबंधी स्पष्ट चित्रण मिलता है। उनकी 'गलियाँ और सड़कें', 'फिर वही लोग', 'जुलूस', 'सागर और मैं' आदि कविताएँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। 'जुलूस' यह जनता के विकास के लिए नहीं तो उसमें नेताओं का स्वार्थ निहित होता

है। ऐसे नेताओं के कथनी और करनी में अंतर होता है। 'फिर वही लोग' कविता में नेता लोग असंघटित समाज को बहकाकर गलत दिशा की ओर ले जाते हैं और आपस में लड़वाने का कार्य करते हैं। अत: मिश्र जी ग़ज़ल क्रमांक 1 में समाज की दिशाहीनता का चित्रण करते हुए कहते हैं -

"कहते हैं वे कि रुकिये नहीं, चलते जाइये
चलते तो हम हैं, चल के मगर जाएँ किधर को।"[11]

इस प्रकार समाज को संदेश एक दिया जाता है और बात तो अलग ही होती है। समाज में प्रगति का संदेश दिया जाता है लेकिन आगे राह बड़ी जटिल होती है। जिससे विकास की गति रुक जाती है। इसी कारण समाज दिशाहीन हो रहा है।

4.1.8 सुख के खोज की समस्या -

प्रस्तुत समस्या वर्तमान युग जीवन की व्यापक और जटिल समस्या है। इसी कारण आदमी दिन-रात सुख के पीछे भागता है। आज सुख आगे और आदमी पीछे ऐसा अविरत संग्राम चल रहा है। पर्याप्त धन होते हुए भी कुछ लोगों को सुख से चैन की नींद नहीं आती। यह मानसिकता ज्यादा तर मध्यवर्ग में स्पष्ट दिखाई देती है। रामदरश मिश्र जी के काव्य में इस समस्या संबंधी कई उदाहरण मिलते हैं। उनकी 'बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ' तथा ग़ज़ल क्रमांक 3, 7, 17 आदि ग़ज़लों में समाज में व्याप्त सुख के खोज की समस्या का चित्रण मिलता है। ग़ज़ल क्रमांक 3 के प्रथम शेर में मिश्र जी कहते हैं कि आदमी की पूरी जिंदगी सुख की तलाश में गुजर जाती है। मोह के कारण जन्म से मृत्यु तक आदमी अनेक समस्याओं में उलझा रहता है। उनकी सातवीं ग़ज़ल में आदमी के उदासी का संकेत मिलता है। आज के वैज्ञानिक युग में आदमी का जीवन ऊपर से सुखी और अंदर से दुखी है। इस समस्या को उठाते हुए कवि ग़ज़ल क्रमांक 3 के प्रथम शेर में कहते हैं -

"हुआ न कुछ भी कहीं सभी संजोने में
उमर गुजर गयी हँसी के लिए रोने में"[12]

इस प्रकार उक्त शेर की तरह आदमी का पूरा जीवन ही सुख की तलाश में दुख में कटता है। अत: सुख की खोज में आदमी का जीवन दुखों की खाई में वह डूब जाता है।

4.1.9 रिश्तों में दरार की समस्या -

स्वातंत्र्योत्तर काल में बढ़ती महानगरीयता के कारण रिश्तों में दरार की समस्या तीव्र रूप से सामने आ रही है। अगर समाज का ढाँचा सुचारु रूप से चलाना है तो

आदमी-आदमी में रिश्ते मजबूत होने बहुत जरूरी है। आज बढ़ती नगरोन्मुखता के कारण रिश्तों में दुराव आने लगा है। वर्तमान युग में माता-पिता, भाई-बहन आदि रिश्ते खोखले सिद्‌ध हो रहे हैं। देहाती व्यक्ति भी शहरी संस्कृति में घुल-मिल जाने के कारण वह भी रिश्तों को भूल रहा है। मिश्र जी के 'दवा की तलाश', 'गठरी' आदि कविताओं तथा ग़ज़ल क्रमांक 42 में रिश्ते-नातों के दुराव का चित्रण मिलता है। 'दवा की तलाश' कविता में कवि जी कहते हैं कि आज भी देहात में आत्मीयता शेष है लेकिन शहर में बसा व्यक्ति उसे समझने में असमर्थ है। शहरों तथा महानगरों में यह स्थिति बहुत उग्र रूप धारण कर रही है। मिश्र जी 42वीं ग़ज़ल में इस दुराव को व्यक्त करते हुए कहते हैं -

"चीखते आते हैं दिन, राते बहुत सहमी हुई
आदमी अपने ही घर में खुद से बेगाना हुआ।"[13]

इस प्रकार 'अपने ही घर में बेगाना होना', रिश्तों में बढ़ते अंतर का ही परिणाम है। परिणामत: एकल परिवार संस्कृति को बहुत बड़ी हानि पहुँच गयी है।

4.1.10 **लापरवाही की समस्या -**

दिन-ब-दिन युवाओं में बेफिक्री वृत्ति बढ़ती जा रही है। वे बदलती परिस्थितियों में अॅडजस्टमेंट नहीं कर सकतें। इसी कारण हर परिस्थिति के प्रति लापरवाही की समस्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। परिस्थिति के प्रति लापरवाही के कारण बहुत से मौके हाथ से निकल जाते हैं और बाद में पछताना पड़ता है। मिश्र जी ने अपने काव्य के माध्यम से परिस्थिति के प्रति असावधान युवकों को सावधान करने की कोशिश की है। इस दृष्टि से उनकी 'अजनबी ठण्डी हवाएँ', 'बाहर तो वसंत आ गया है' तथा ग़ज़ल क्रमांक 20 आदि उल्लेखनीय कविताएँ हैं। कविताओं के शीर्षक से ही बोध होता है कि कवि को क्या कहना है -

"खिड़कियाँ खोल दो
हटा दो परदे
माना कि बाहर गरज रही हैं अजनबी ठण्डी हवाएँ

× × ×

इन्तजार करते रह जाओ किसी आने वाले क्षण का,
जो कभी शायद कभी नहीं आयेगा।"[14]

स्पष्ट है कि अजनबी ठण्डी हवाएँ किसी का इंतजार नहीं करती। वह सदैव बहती रहती है। वास्तविक युवकों को यह कहने की जरूरत नहीं है लेकिन कवि का संवेदनशील मन इस बात को उठाए बिना नहीं रह सकता। यहाँ लापरवाह युवकों में प्रेरणा भरने का कार्य कवि करता है।

4.1.11 **कृत्रिम जीवन तथा घुटन की समस्या -**

स्वातंत्र्योत्तर काल में बढ़ते औद्योगिकरण के कारण नगरों का निर्माण हुआ। नगरों में बढ़ती आबादी के कारण कृत्रिम जीवन तथा घुटन की समस्या उत्पन्न हुई। आज भागदौड़ की जिंदगी में कृत्रिम जीवन तथा घुटन की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। स्वयं कवि भी इस समस्या के शिकार हुए हैं। उनकी हालत किसी हादसे में बिछुडे हुए बालक की तरह हुई है जो बार-बार अपनी माँ को याद करता है। ऐसी हालत केवल कवि की ही नहीं है तो देहात से शहर में बसे हर आदमी की है। इसका यथार्थ चित्रण मिश्र जी के काव्य में मिलता है। इस दृष्टि से उनकी 'सड़क', 'जंगल', 'धूप' आदि कविताएँ तथा गज़ल क्रमांक 40, 42, 52 में भी परिलक्षित होता है। 'जंगल' कविता में कृत्रिम जीवन का वर्णन करते हुए मिश्र जी कहते हैं -

"यहाँ तो बन्द जल में तैरती हैं मछलियाँ
बन्द हवाओं पर टँगे हैं मकान
जैसे कुहरे पर आकाश
बन्द खुशबुओं को बेचती फिरती हैं रातें
कहाँ है वह जंगल
जहाँ से कभी एक बार गुज़रा था।"[15]

मिश्र जी दिल्ली जैसे महानगर में रहते हुए भी उनका मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम है क्योंकि वहाँ शहर की तुलना में कृत्रिमता कम है। इसलिए मिश्र जी की गज़ल क्रमांक 46 के शेर में कहते हैं -

"बस गया हूँ दोस्तों, दिल्ली शहर के बीच यों तो
घर मेरा अभी भी वही हाँ वही गोरखपूर जिला है।"[16]

इससे स्पष्ट हो जाता है कि कवि का शरीर दिल्ली में और मन गाँव की यादों में भटकता रहता है। महानगर में उन्हें कृत्रिम जीवन मिला लेकिन वह जीवन गंधहीन पुष्प के समान है। परिणामत: उनका जीवन घुटन भरा रहा है।

4.1.12 राजनीतिक समस्या -

स्वातंत्र्योत्तर काल की यह महत्त्वपूर्ण समस्या है। वर्तमान युग में समाज को सबसे अधिक प्रभावित करनेवाली शक्ति है - राजनीति। वर्तमान युग में राजनीति भी एक समस्या बन गयी है। नेतागिरी वर्तमान युग का व्यवसाय बन गया है। उनमें से देशसेवा का भाव लुप्त होता जा रहा है। वे सिर्फ आम जनता का शोषण करने का कार्य कर रहे हैं। भ्रष्ट राजनीतिज्ञों ने देश को अंदर से खोखला बना दिया है। राजनीतिक समस्या के अंतर्गत अनेक समस्याएँ उभर कर सामने आती है। उनमें से राजकीय गुंडा-गर्दी, अमानवीय वृत्ति, चुनाव में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा राजनीतिज्ञों की दलबदलू वृत्ति आदि प्रमुख समस्याएँ व्याप्त हैं। मिश्र जी के विवेच्य काव्य में यह समस्याएँ अपना स्थान बना चुकी है ।

4.1.12.1 राजकीय गुंडा-गर्दी तथा अमानवीय वृत्ति की समस्या :-

राजनीतिक क्षेत्र में राजकीय गुंडा-गर्दी तथा अमानवीय वृत्ति की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। जिसके परिणाम स्वरूप सामान्य जनजीवन प्रभावित हो रहा है। राजकीय दबाव के कारण बिना वजह से विरोधी दलों को सताया जाता है। मिश्र जी की 'कोई दर्पण टूटा होगा', 'डर' आदि कविताओं में तथा ग़ज़ल क्रमांक 4, 19, 42 आदि ग़ज़लों में प्रस्तुत समस्या संबंधी स्पष्ट चित्रण मिलता है। 'कोई दर्पण टूटा होगा' कविता में राजकीय दबाव, 'डर' कविता में नेता लोगों की अमानवीय वृत्ति तथा ग़ज़ल क्रमांक 4 में नेता लोगों का रोब तथा जनता की स्थिति का वर्णन मिलता है। नेताओं की अमानवीय वृत्ति को चित्रित करते हुए मिश्र जी कहते हैं -

"वे जा रहे हो तो कहीं रास्ता रुका होगा
वे उठ रहे हैं तो कोई कहीं झुका होगा।"[17]

मिश्र जी अपनी एक अन्य ग़ज़ल में राजकीय अमानवीय वृत्ति का चित्रण करते हुए कहते हैं कि -

"भूख और प्यास में जगे अब तक
जागना अब गुनाह है, सो लें।"[18]

इस प्रकार राजकीय अमानवीय वृत्ति तथा रोब संबंधी स्पष्ट चित्रण मिश्र जी के काव्य में मिलता है।

4.1.12.2 **राजकीय दलबदलू वृत्ति की समस्या :-**

प्रस्तुत समस्या दल-प्रमुखों के तथा सामान्य जनता के सामने भी खड़ी है। आज पक्षनिष्ठा खत्म होती जा रही है। कुर्सी के लिए विरोधी दलों में प्रवेश करते वक्त नेता बिल्कुल हिचकिचाते नहीं हैं। आज एक दल के लिए गला फाड-फाड़कर भाषण देनेवाला नेता कल दूसरे दल का भी प्रचार उतनी ही शक्ति से करता है। जो कट्टर लोग हैं वे नेताओं के लिए अपनी जान गँवाते हैं और नेताओं को इसकी जरा भी फिक्र नहीं होती। इन सभी बातों का यथार्थ चित्रण मिश्र जी के काव्य में मिलता है। 'जुलूस', 'फिर वही लोग', 'केन्द्र और परिधि' तथा गज़ल क्रमांक 13, 44 आदि उल्लेखनीय कविताएँ तथा गज़लें हैं। 'फिर वही लोग' इस लम्बी कविता में मिश्र जी कहते हैं -

> ''फिर वही लोग जा रहे हैं इस सड़क से
> जो कल गये थे।
> आज उनकी वर्दियाँ और झण्डे बदले हैं
> आवाजें वहीं हैं, नारे नये हैं।''[19]

इस प्रकार दलबदलू नेता और उनकी राजनीति संबंधी विचारधारा का स्पष्ट चित्रण उनके काव्य में मिलता है।

4.1.12.3 **चुनाव में व्याप्त भ्रष्टाचार की समस्या :-**

राजनीतिक क्षेत्र में यह भी एक महत्त्वपूर्ण समस्या है। जनता में भाषा, सीमा तथा जाति-धर्म आदि के वाद खड़े कर चुनाव जीत लिये जाते हैं। इसी कारण सीमावासियों का एक-दूसरे के प्रति देखने का नजरिया बदल जाता है। अत: इस वजह से राष्ट्रीय एकता को बहुत बड़ी हानि पहुँचती है। प्रस्तुत समस्या का चित्रण 'फिर वही लोग' इस लम्बी कविता में मिलता है। तथा गजल क्रमांक 13 में चुनाव के वक्त लोगों के मन में किस प्रकार डर पैदा किया जाता है इसका अंकन हुआ है -

> ''लूट कर लोगों की खुशियां भर लिये घर आपने
> क्या उगा भीतर कोई बिरवा, बड़े बंजर हैं आप''[20]

स्पष्ट है कि उक्त पंक्तियों में रामदरश मिश्र जी ने अपने काव्य में राजनीतिक लोग आम जनता की खुशियाँ किस प्रकार लुटते हैं इसका जायजा लिया है।

4.1.13 **खोखली देशभक्ति की समस्या -**

खोखली देशभक्ति देश के लिए बहुत बड़ा खतरा है। समाज में 'मुँह में

राम बगल में छुरी' ऐसी स्थिति पैदा हुई है। 'खाने के दाँत अलग और दिखाने के अलग' इसी कारण देश में अशांति तथा आतंकवाद फैल रहा है। कवि ने इस समस्या को अपनी 'वापसी', 'फिर वही लोग', 'पता', 'खाली हूँ मन भरा भरा-सा' आदि कविताओं में तथा गज़ल क्रमांक 41 और 53 आदि गज़लों में चित्रित किया है। 'वापसी' कविता में जनता की दिशाभूल का चित्रण है। देश की, समाज की सेवा करनेवाले कई लोग देशभक्ति का ढोंग रचाते है। भ्रष्टाचारी लोगों के खिलाफ आवाज नहीं उठातें। भ्रष्टाचारी लोग डर के मारे संपत्ति का कोई हिस्सा जनता में बाँट देते हैं। तब यही गरजनेवाली जनता कुत्तों की तरह फेंके टुकडों को चबाते कोने में हाथ रखती है -

"लौट आये हैं वे लोग
जो कल मुट्ठियाँ ताने हुए
आँखों से आग और मुँह से झाग उगलते हुए
गये थे पीछे पीछे एक हमलावर दस्ते के।

× × ×

लौटे आये हैं वे लोग जो कल गये थे
और अँधेरे-बंद कमरे में गुम होकर
अपने-अपने हिस्से का बँटवारा कर रहे हैं।"[21]

कहना आवश्यक नहीं कि खोखली देशभक्ति का स्पष्ट चित्रण मिश्र जी के काव्य में उजागर हुआ है।

4.1.14 साहित्यिक क्षेत्र की समस्याएँ -

साहित्यिक क्षेत्र में प्रचलित समस्याओं का चित्रण मिश्र जी के काव्य में प्रचूर मात्रा में मिलता है। स्वयं कवि प्रस्तुत समस्या का शिकार हुआ है। उन्होंने साहित्य की समस्या के खिलाफ अपने काव्य में आवाज उठायी है। उनके कई साक्षात्कारों में भी साहित्य की समस्या संबंधी जिक्र मिलता है। 'साहित्य अमृत' पत्रिका के 'स्मृति और संवाद' शीर्षक के अंतर्गत डायरी के पन्नों में उन्होंने इस समस्या-संबंधी विस्तार से जिक्र किया है। साहित्य में कई धाराएँ हैं। इनमें से तीन मुख्य हैं - केंद्रीय धारा, परिधि धारा, परिधि के बाहर की धारा। इनमें से केंद्रीय धारा मुख्य धारा होती है। मुख्य धारा का नेतृत्व प्रभावशाली रचनाकार तथा आलोचक करते हैं। जो इस मुख्य धारा की चापलुसी करते हैं उनकी वे सराहना करते हैं लेकिन जो परिधि के बाहर रहकर लिखते हैं उनके प्रति अन्याय भी करते हैं। 'मुख्य धारा' में शामिल होनेवाले लोगों का वर्णन करते हुए मिश्र जी कहते हैं

- ''और शामिल होनेवाले लोग अपनी छोटी-छोटी औकात लिये यां तनकर चलते हैं जैसे उनके सामने रामचंद्र शुक्ल, प्रसाद, निराला, प्रेमचंद आदि क्या चीज हैं।''[22] मिश्र जी की कई कविताओं तथा गज़लों में इस समस्या संबंधी चित्रण मिलता है। 'होने, न होने के बीच' औकात न होकर पुरस्कार लेने से दल के कितने अत्याचार सहने पड़ते हैं। 'कंधे पर सूरज' कविता में यथार्थ के साथ न छोड़ने के कारण उन पर हुए अन्याय का चित्रण प्राप्त होता है। 'सेमल' कविता में उनके प्रति साहित्यिक क्षेत्र में फैले अन्याय का चित्रण है। 'फिर वही लोग' कविता में किराये के कवियों पर कवि चोट कराता है -

''शाही महफिल में किराये के कवि
वीर रस की कविताएँ भूँक रहे हैं।''[23]

इसके साथ ही उनकी गज़ल क्रमांक 34 तथा 50 में साहित्यिक समस्या संबंधी चित्रण मिलता है। आज साहित्यिक क्षेत्र भी इतना जटिल हुआ है कि किसी धारा से दूर रहकर नाम कमाना मुश्कील हो गया है। इस प्रकार साहित्यिक समस्या संबंधी स्पष्ट चित्रण मिश्र जी के काव्य में मिलता है।

4.1.15 **न्याय और आम आदमी की समस्या** -

वर्तमान युग में न्याय और आम आदमी की हालत कुछ ठीक नहीं रही। आज पैसे के बल पर फैसला बदला जाता है। स्वार्थी लोगों ने न्याय-व्यवस्था को अंधा कर दिया है। वर्तमान युग में आम आदमी को न्याय मिलना मुश्कील हुआ है। इसका रोष मिश्र जी ने कई कविताओं तथा गज़लों में प्रकट हुआ है। मिश्र जी गज़ल क्रमांक 4 में कहते हैं -

''सबूत लेके कहाँ जा रहा है तू साथी
तेरे बिना ही तेरा न्याय हो चुका होगा।''[24]

आज दिन-दहाड़े सभी के सामने कत्लें हो रही हैं। लेकिन उसे कोई रोक नहीं सकता। अदालत को भी इन सारी बातों का पता होकर भी मुकदमा चलाया जाता है। इसलिए मिश्र अपनी 23वीं गज़ल में अदालत राज को व्यक्त करते हैं -

''यों हुआ है कत्ल सबके सामने
पर अदालत के लिए यह राज है।''[25]

इस प्रकार न्याय-व्यवस्था की समस्या संबंधी चित्रण मिश्र जी के काव्य में मिलता है।

4.1.16 **धार्मिक समस्या -**

भारतीय संविधान ने भारत को 'धर्मनिरपेक्ष' राष्ट्र के रूप स्वीकृत किया है लेकिन वर्तमान युग में धर्म एक समस्या बनकर खड़ा है। हर धर्म दूसरे धर्म से कटता जा रहा है। भारत में अनेक धर्मों के लोग रहते हैं। हर धर्म की अपनी-अपनी संघटन शक्ति है। इन धर्मों के अंतर्गत भी अनेक जातियाँ और उपजातियाँ हैं। उन्होंने भी अपनी-अपनी अलग संघटनाएँ बनायी हैं। ये संघटनाएँ अपने मूल उद्देश्य से हटकर दूर चली गयी है। धर्म वर्तमान युग में किसी भी मुद्दे को आधार बना कर लड़ने का एक साधन बन गया है। चुनाव में भी नेता लोग धर्म की आग भड़काकर चुनाव लड़ते हैं। कवि ने 'धर्म', 'मकान', 'पेड़' आदि कविताओं में धार्मिक समस्या की ओर संकेत किया है। मिश्र जी की 'पेड़' कविता में धार्मिक एकता तथा विभाजन के बाद आये बदलाव का चित्रण अंकित हुआ है। वर्तमान युग में धार्मिकता, कट्टरता में बदल रही है। परिणामत: समाज में अशांति फैल गयी है। इसका चित्रण 'पेड़' कविता में मिलता है -

> ''पेड़ की डालियाँ तोड़-तोड़ कर मारने और मरने लगे।
> छाँह तो टूटती गयी,
> डर ज्यों-का-त्यों बना रह गया
> आँधियों से लड़ने वाला यह पेड़
> देखते-देखते एक ठूँठ तना रह गया।''[26]

4.1.17 **किसान जीवन की समस्याएँ -**

समाज में किसान वर्ग पहले से ही पीड़ित रहा है। लेकिन उनमें भी एक आत्मिक ऊर्जा है। वह नि:स्वार्थ भाव से देश की जनता का पालन करने का कार्य करता है। अगर दुनिया भर के सभी किसानों ने अन्य कर्मचारी संघटनाओं की तरह इस कार्य में असमर्थता दिखाई देती तो दुनिया की बोलती बंद हो जाती। भारत के भोलेभाले किसान को सोने का अंडा देनेवाली मुर्गी की तरह नोच-नोच कर खाया है। प्रादेशिक असमानता के कारण किसानों का अनेक समस्याओं से जूझना नजर आता है। कभी बाढ़ तो कभी अकाल से हर साल कोई-न-कोई समस्या रहती ही है। इसी कारण भारतीय किसान जीवन प्रगति के चरम शिखर पर नहीं पहुँच पाया। किसान के जीवन पर सिर्फ किसान ही नहीं तो उस पर उसका परिवार भी निर्भर रहता है। आज किसानों की दशा दीनहीन हो गयी है। मिश्र जी इस समस्या की ओर संकेत करते हुए 'हम पूरब से आये हैं' कविता में कहते हैं -

"एक गाँव है अपना, पर है खेत न बारी
घर था टूटा, निगल गयी नदिया हत्यारी।
बैठा है गुमसुम कछार, झरते अकाल के साये हैं।"[27]

'बादल चले जा रहे हैं' कविता में आकाश में बादल छाने पर होनेवाली पल्लवित मन:स्थिति तथा बादल का बिना बरसे चले जाने पर होनेवाली निराशा का चित्रण है। किसान जीवन में व्याप्त शोषण यह दूसरी समस्या है। इसका जिक्र मिश्र जी ने गज़ल क्रमांक 6 में किया है। इस गज़ल में व्यापारियों तथा दलालों द्वारा किसानों का किस प्रकार शोषण किया जाता है इसका चित्रण मिलता है। 'गाढ़े गये दिन बीत' कविता में किसान को मालूम है कि उसका शोषण होता है फिर भी वह चूप है। वह हिम्मत नहीं हारता। बैलों के पीछे वह मेहनत के गीत गाते-गाते चलता है। किसान जीवन का दु:ख कुछ अलग ही होता है -

"साखी है तू, सूने प्रलय की छाँह से हो,
गुजरे हम कितनी ही दफा इस राह से हो,
हारे नहीं हम जीत रे, बैला बाँएँ से औं-औं।"[28]

इस प्रकार मिश्र जी के काव्य में किसान जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण मिलता है।

4.1.18 पर्यावरण की समस्या -

पर्यावरण की समस्या वर्तमान युग की महत्त्वपूर्ण समस्या है। वर्तमान युग में प्रदुषण के कारण मानवी जीवन संकटों से घिरा हुआ है। इस धोके की सूचना मिश्र जी के काव्य से मिलती है। उनके काव्य में पर्यावरण की समस्या संबंधी पर्याप्त चित्रण मिलता है। अगर आदमी उचित समय पर इस समस्या के प्रति जागृत नहीं होता तो आगे की परिस्थिति भयानक साबित होगी। इस हालत तक पहुँचाने का कार्य स्वयं मनुष्य ने ही किया है। इसी कारण समय-असमय वर्षा, अकाल, बाढ़, भूकंप, त्सुनामी आदि अनेक नैसर्गिक आपदाओं से जन-जीवन प्रभावित हे रहा है। मिश्र जी ने 'वसन्त', 'धूप', 'जंगल', 'सड़क' तथा 'चिड़िया' आदि कविताओं में पर्यावरण की समस्या संबंधी चिंता व्यक्त की है। कवि को लगता है कि यह महानगरीय कृत्रिम जीवन आदमी को मृत्यु की खाई में धकेल रहा है। 'चिड़िया' कविता में मिश्र जी व्यंग्यात्मक भावबोध व्यक्त करते हैं -

''चिड़िया उड़ती हुई कहाँ से आयी
बहुत देर तक इधर उधर भटकती हुई
अपना घोंसला खोजती रही
फिर थक कर जली हुई डाल पर बैठ गयी
और सोचने लगी -
आज जंगल में कोई आदमी आया था क्या?''[29]

उक्त पंक्तियों में कवि ने मनुष्य के प्रति व्यंग्य भाव व्यक्त किया है। एक अन्य कविता में अपने मन का दुःख व्यक्त करते हुए मिश्र जी कहते हैं -

''न जाने कहाँ चली गयी वह धूप
वह कुछ बोलती भी है या गूँगी हो गयी
कुछ नहीं मालूम''[30]

गज़ल में भी मिश्र जी ने प्रकृति के प्रति आस्था जताई है -

''हो गया वनवास सा है घर शहर के बीचो बीच
चलो कहीं घर बना लें, फिर कहीं वनवास में
धीरे-धीरे जिन्दगी मेरी जिन्दगी कहाँ लाई मुझे
मैं खड़ा बाजार में, मौसम बसा है साँस में।''[31]

अत: स्पष्ट है कि मिश्र जी ने अपने काव्य तथा गज़लों में पर्यावरण समस्या संबंधी समस्याओं का विस्तार से विवेचन किया है।

4.1.18 **प्रेमी-युगलों की समस्या -**

वर्तमान युग की यह भी महत्त्वपूर्ण समस्या है। आज की फिल्मों का युवा पीढ़ी पर बुरा असर हो रहा है। फिल्मी दुनिया और असली दुनिया में फर्क है। क्योंकि आज भी लोगों के मन पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव है। ऊपर से 'मॉडर्न' दिखनेवाला आदमी अंदर से भारतीय है। इसी कारण इन प्रेमी युगुलों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आज का समाज प्रेमियों के प्रति निष्ठुर बनता हुआ दिखाई देता है। प्रेमियों के मन में भय की समस्या सदैव विद्यमान रहती है। कभी समाज का तो कभी प्रेम टूटने का, तो कभी जाति धर्म के बंधनों का भय उन्हें निरंतर सताता है। इसे चित्रित करते हुए मिश्र जी कहते हैं -

"काँप रहे हैं गीत होठ में, झर झर झरता मेह
काँपे फर-फर पात कि थर-थर-थर बजरे की देह
कहीं ऐसा न हो कि दो दिन में खेतों का योवन डूबे"[32]

कवि ने यहाँ प्रकृति चित्रण के माध्यम से प्रेम में व्याप्त भय समस्या चित्रण किया है। प्रेम की दूसरी महत्त्वपूर्ण समस्या प्यार में आयी व्यावसायीकता की है। दिनों-दिन यह समस्या विकृत रूप धारण कर रही है। आज सच्चे प्रेमियों को ढूँढ़ना मुश्किल हो गया है। प्यार का अर्थ खाना-पीना और ऐश करना और भोग तक ही सीमित लिया जाता है। लेकिन अगर सच्चे प्रेमी के प्रति ऐसा हादसा हुआ तो उनकी पूरी जिंदगी तबाह हो जाती है। अपनी ग़ज़ल में इस समस्या की ओर मिश्र जी संकेत करते हैं -

"मुस्कानें भी नाप-तौल कर जिस बाजार में बिकती हैं
लूटा रहा कहकहे फकीरा वहीं अजब हैरानी है।"[33]

स्पष्ट है कि मिश्र जी ने प्रेमियों के जीवन में व्याप्त समस्याओं का चित्रण बड़ी सूक्ष्मता से अंकित किया है।

इस प्रकार कवि रामदरश मिश्र जी ने अपने काव्य के माध्यम से अनेक महत्त्वपूर्ण समस्याओं को उठाया है। इसके साथ ही काम संबंधी समस्या, झूठे अहंभाव की समस्या, समाज में व्याप्त बुराई की समस्या, अकेलेपन की समस्या, चापलुसी, संस्कारहीनता तथा सांस्कृतिक समस्या संबंधी समस्याओं का चित्रण भी उनके काव्य में मिलता है। इस प्रकार रामदरश मिश्र जी के काव्य में युगीन जीवन के विविध समस्याओं का चित्रण मिलता है।

4.2 विवेच्य काव्य में समस्याओं का समाधान :

साहित्यकार अपनी रचना के माध्यम से समस्याओं का पूर्ण रूप से समाधान नहीं देता। फैसले का अधिकार वह पाठकों पर छोड़ देता है। प्रबुद्ध पाठक अपनी-अपनी सोच से हल निकालने की कोशिश करता है। कवि की अपने काव्य के प्रति भूमिका बाँधते हुए वेदप्रकाश अमिताभ जी कहते हैं - "हम कब से देख रहे हैं यह खेल लेकिन कुछ कर नहीं सकते। केवल कविता लिख सकते हैं। कविता जो आत्मा के शब्दों से लिखी जाती है।"[34] फिर भी कवि रामदरश मिश्र जी के काव्य के अध्ययन के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि उनके काव्य में परिवर्तन के कई संकेत मिलते हैं। क्योंकि व्यक्ति के सामने समस्याएँ हो तो आदमी अपने-आप सही रास्ता चुन सकता है। इस दृष्टि से मिश्र जी

की कई गज़लें तथा कविताएँ संदेशात्मक है। उन्होंने जीवन को सदैव सकारात्मक दृष्टि से देखा है। अपने पाठकों को भी वे जीवन से उन्मुख नहीं करते। उनके काव्य से सदैव जूझने की प्रेरणा मिलती है। वे मेहनत के बाद की सफलता पर विश्वास रखते हैं। यह उनकी अनुभव सिद्ध बात है। स्वयं हरिवंशराय बच्चन जी ने भी पाठकों में उत्साह भरने की कोशिश की है। वे कहते हैं - "कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती। डरनेवालों की नौका कभी पार नहीं होती।" उसी प्रकार स्वतंत्रतापूर्व के काल में लोगों में जागृति हेतु लिखी कविताएँ तथा उससे उत्पन्न परिणाम ही समाधान है। कवि रामदरश मिश्र जी ने भी वही कार्य किया है। वे पाठकों को परिस्थिति के प्रति सचेत कर उनकी आत्मिक ऊर्जा बढ़ाने का कार्य करते हैं। परिस्थिति से डरकर भागनेवाले मनुष्य का आत्मबल बढ़ाते हुए 'सागर और मैं' कविता में वे कहते हैं -

"रूको ओ मनुष्य !
सागर चिल्लाया -
लेते जाओ अपने सपने
मेरे दामन पर जो छोड़ गये
साहस हो तो इनको पालो, जूझो, तड़पो
मुझ-सा ही।"[35]

मिश्र जी का मन प्रगति में विश्वास रखता है। उनका विश्वास है कि कोई भी मनुष्य यकायक प्रगति के ऊँचे शिखर पर नहीं पहुँच सकता, क्योंकि हम सब सामान्य परिस्थिति से गुजरनेवाले आदमी हैं। जिस रास्ते से हमें गुजरना है वह रास्ता खुद का अपना रास्ता हो। किसी को निचे गिराकर स्वयं अपने आपको ऊपर उठाना मिश्र जी को मंजूर नहीं। वे जो भी पाना चाहते हैं वह अपने बलबूते पर और आहिस्ता-आहिस्ता। इसलिए वे अपने गज़ल संग्रह की अंतिम 54वीं गज़ल में कहते हैं -

"जहाँ आप पहुँचे छलांगें लगा कर
वहाँ मैं भी पहुँचा मगर धीरे-धीरे"[36]

हम अगर किसी महात्माओं के चरित्र को पढ़ते हैं तो ज्ञात होता है कि उनको जीवन में अनेक संकटों से सामना करना पड़ा है, लेकिन वे अपने मार्ग से हटे नहीं। आदमी का स्वभाव ऐसा होना चाहिए जितना ही दबाया जाय उतने ही जोर से ऊपर आने की कोशिश व्यक्ति ने करनी चाहिए। इसलिए मिश्र जी कहते हैं -

"कैद रखिए आप सारे रास्तों को
पत्थरों से चलके मैं जाने लगा हूँ।"[37]

मिश्र जी की गज़लों तथा कविताओं में समाधान के रूप में कुछ पंक्तियाँ भी मिलती है। 49वीं गज़ल में बाहरी दुनिया के संपर्क के कारण परिवर्तन दिखाया है। 'गलियाँ और सड़के' कविता में क्रांति का कवि आवाहन करता है। तो 'डर' कविता में जनता जागरूकता से उत्पन्न नेता लोगों की हालत का चित्रण है -

"आज एकाएक वह चौंक गया
एक नंगे आदमी की तनी हुई आँखें
उसे देख कर मुस्कुरा रही थीं
और कोई नुकीली चीज
उसके भीतर धँसती जा रही थी
उसने मुस्कुराने की बहुत कोशिश की
लेकिन मुस्कुरा नहीं सका।
आज उसे पहली बार डर लगा था।"[38]

'अजनबी ठण्डी हवाएँ', 'बाहर तो वसंत आ गया है' इन कविताओं के माध्यम से स्वयं कवि लोगों को परिस्थितियों के प्रति सचेत करता है। जीवन में प्राप्त समय का सही इस्तमाल करने का कवि संदेश देता है। जिससे समाज में उन्नति हो सके। मिश्र जी कहते हैं कि परिधि के बाहर निकले बिना हमारा विकास संभव नहीं है। वे कहते हैं -

"खिड़कियाँ खोल दो
हटा दो परदें।
माना कि बाहर गरज रही हैं अजनबी ठण्डी हवाएँ।"[39]

34वीं तथा 35वीं गज़लों में वे परिस्थिति से जूझकर अपना अलग स्थान निर्माण करने का संदेश देते हैं। मिश्र जी गज़ल क्रमांक 34 में कहते हैं-

"कोई न कोई होगा कहीं मेरा राजदाँ
आँसू तो उमड़ते हैं, बहाता नहीं हूँ मैं।"[40]

इस प्रकार रामदरश मिश्र जी ने लोगों का हौसला बढ़ा कर प्रगति की ओर उन्हें मुड़ने के लिए प्रेरणा दी है। अपने काव्य के माध्यम से लोगों के मन में आशा के दीप जगाने में मिश्र जी सफल हुए हैं। इस प्रकार मिश्र जी की कविताओं ने और गज़लों ने युग-जीवन की समस्याओं के साथ-साथ समाधान देने में पर्याप्त सफलता हासिल की है।

निष्कर्ष :

रामदरश मिश्र जी के 'विवेच्य काव्य में युगजीवन की समस्याएँ एवं समाधान' के अध्ययन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि स्वातंत्र्योत्तर काल की बदलती सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति में आए उतार-चढ़ाव के कारण मानव जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई। स्वातंत्र्योत्तर काल में वैज्ञानिक विकास तथा औद्योगिकरण के कारण शहरों में जनसंख्या का केंद्रीकरण हुआ। परिणामत: लोगों को मिलनेवाली सुविधाओं का अभाव महसूस होने लगा। पर्याय रूप में कई कृत्रिम चीजों का निर्माण हुआ, लेकिन उसके कई घातक परिणाम जनता के सामने आए हैं। इन परिणामों के साथ-साथ समाज-जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार जैसी महाभयंकर समस्या उत्पन्न हुई है। इस समस्या ने और भी अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। जिसके कारण गरीब-अमीरों के बीच का अंतर और बढ़ता गया है। आम जनता अनेक समस्याओं से जूझती रही है। वर्तमान युग में प्रमुख रूप से शोषण की समस्या, भय की समस्या, बेरोजगारी तथा गरीबी की समस्या, महानगरों में बढ़ती जनसंख्या की समस्या, व्यसनाधीनता की समस्या, असंघटितता तथा दिशाहीनता की समस्या, सुख खोजने की समस्या, रिश्तों में दरार की समस्या, लापरवाही की समस्या, कृत्रिम जीवन तथा घुटन की समस्या, राजनीतिक समस्या, खोखली देशभक्ति की समस्या, साहित्यिक समस्या, न्याय-व्यवस्था की समस्या, धार्मिक समस्या, किसान जीवन की समस्या, पर्यावरण की समस्या और प्रेमी-युगलों की समस्या आदि अनेक समस्याओं का चित्रण मिश्र जी के काव्यों तथा ग़ज़लों में मिलता है। इसके साथ ही चापलुसी, समाज में व्याप्त बुराई, संस्कारहीनता तथा अकेलापन आदि कई समस्याएँ मिश्र जी के विवेच्य काव्य में विद्यमान रही हैं। इन सभी समस्याओं का यथार्थ चित्रण मिश्र जी के काव्य में पर्याप्त मात्रा में मिलता है। बदलते युग की बदलती समस्याएँ रोकने में सरकार भी असफल हुई है। जिससे वर्तमान जीवन की समस्याएँ अधिकाधिक जटिल होती जा रही है। उनकी कई काव्य-पंक्तियों में बदलती परिस्थितियों पर अंशिक रूप से समाधान देने का प्रयास हुआ है। इसमें आत्मबल की प्रमुखता और परिस्थितियों के प्रति सावधान रहना जरूरी है।

अंतत: कहना होगा कि मिश्र जी को विवेच्य काव्य तथा ग़ज़लों में 'युगीन जीवन' की समस्याओं का चित्रण करने में पर्याप्त सफलता मिली है। कवि अपनी कविता तथा ग़ज़लों में सिर्फ समस्याओं का रोना-धोना ही प्रस्तुत किया बल्कि अधिक तर समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया है।

संदर्भ :

1. सं. (डॉ.)(श्रीमती) अजित गुप्ता, मधुमती, सितम्बर-2007, मुखपृष्ठ से उद्धृत
2. सं. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, साहित्य अमृत, जनवरी-2007, पृष्ठ - 39
3. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, 'लाशों के बीच', पृष्ठ - 39
4. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गज़ल क्र.6, पृष्ठ - 22
5. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, दस्तक, पृष्ठ-87
6. वही, पृष्ठ - 88
7. वही, दिशाएँ बन्द हैं। पृष्ठ - 44
8. वही, वह, पृष्ठ - 67-68
9. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गज़ल क्र. 12, पृष्ठ - 18
10. सं.रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, रात और सुबह, पृष्ठ-30
11. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गज़ल क्र. 1, पृष्ठ - 7
12. वही, गज़ल क्र. 3, पृष्ठ - 9
13. वही, गज़ल क्र. 42, पृष्ठ - 48
14. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, अजनबी ठण्डी हवाएँ, पृष्ठ-43-44
15. वही, जंगल, पृष्ठ - 47
16. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गजल क्र. 46, पृष्ठ - 52
17. वही, गजल क्र. 4, पृष्ठ - 10
18. वही, गजल क्र. 19, पृष्ठ - 25
19. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, फिर वही लोग, पृष्ठ-92
20. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गज़ल क्र. 13, पृष्ठ - 19
21. सं.रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, 'वापसी', पृष्ठ-63-64
22. सं. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, साहित्य अमृत - जनवरी 2007, पृष्ठ - 15
23. सं.रघुवीर चौधरी,रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ,फिर वही लोग,पृष्ठ-105
24. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गज़ल क्र. 4, पृष्ठ - 10
25. वही, गज़ल क्र. 23, पृष्ठ - 29
26. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, पेड़, पृष्ठ-87

27. वही, हम पूरब से आये हैं, पृष्ठ - 110

28. वही, गाढ़े गये दिन बीत, पृष्ठ - 117

29. वही, चिड़िया, पृष्ठ - 78

30. वही, धूप, पृष्ठ - 76

31. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, ग़ज़ल क्र. 18, पृष्ठ - 24

32. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, बादल घेर-घेर मत बरस, पृष्ठ-116

33. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, ग़ज़ल क्र. 16, पृष्ठ - 22

34. वेदप्रकाश अमिताभ, रामदरश मिश्र : रचना समय, पृष्ठ - 19

35. सं.रघुवीर चौधरी,रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ,सागर और मैं,पृष्ठ-34

36. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, ग़ज़ल क्र. 54, पृष्ठ - 60

37. वही, ग़ज़ल क्र. 50, पृष्ठ - 56

38. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, डर, पृष्ठ-91

39. वही, अजनबी ठण्डी हवाएँ, पृष्ठ - 42

40. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, ग़ज़ल क्र. 34, पृष्ठ - 40

❑❑❑❑